# पाठ 12. दादा साहब फालके

## पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ मेहनत और लगन के महत्त्व के बारे में चित्रित है। इस पाठ के द्वारा बच्चे भारतीय सिनेमा के जनक 'दादा साहब फालके' के व्यक्तित्व एवं उनके सिनेमा जगत के सफर को जान पाएँगे। किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्ति के लिए कड़ी मेहनत आवश्यक होती है।

## पाठ का सारांश

भारतीय सिनेमा के पितामह कहे जाने वाले घुंडीराज गोविंद फालके का जन्म 30 अप्रैल, 1870 में हुआ। उन्हें नाटक देखने का शौक था। पिता-पुत्र हर रविवार नाटक देखने निकल पड़ते। चलचित्र देखकर पिता और पुत्र दोनों इतने अचंभित थे कि दूसरे दिन पूरे परिवार को 'ईसा मसीह' पर आधारित चलचित्र दिखाने ले गए। घर लौटकर भी पूरा परिवार उसी की चर्चा करता रहा। तभी फालके जी ने चलचित्र के व्यवसाय में उतरने का निश्चय किया। उन्होंने खुद को चलचित्र के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने सन् 1913 में 'राजा हरिश्चंद्र' फिल्म बनाकर भारतीय सिनेमा का आगाज़ किया। यह बिना आवाज़ वाली फ़िल्म थी। लेकिन भारत में सिनेमा की शुरुआत हो चुकी थी। भारतीय सिनेमा एवं फ़िल्म के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'दादा साहब फालके' राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार दिया जाता है।

## अध्यापन संकेत

पाठ पढ़ाने से पूर्व बच्चों से **पठन-पूर्व चर्चा** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न पूछें। बच्चों को दादा साहब फालके के बारे में संक्षेप में बताएँ। पाठ का मुखर वाचन करें। वाचन में उच्चारण संबंधी अशुद्धियों पर विशेष ध्यान दें। कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

**पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–**

- बच्चों से कुछ फ़िल्मों के नाम पूछें।
- उनसे पूछें, उन्हें कौनसी फ़िल्म सबसे अधिक पंसद है और क्यों?
- पहली बोलती फ़िल्म का नाम बताएँ।
- बच्चों से पूछें, दादा साहब फालके के जीवन से उन्हें क्या प्रेरणा मिलती है?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।